कान्हा कैसी करी है चतुराई रे

कान्हा कैसी करी है चतुराई रे
==========
कान्हा, कैसी, करी है, चतुराई रे,
यह मेरी, समझ, नहीं आई रे ॥

तूने, मथुरा*, नगरी में, जन्म लिया।
तेरे, एक* पिता, दो मात हुई।
गोकुल में, बंटी, बधाई रे,
यह मेरी, समझ, नहीं आई रे।
कान्हा, कैसी, करी है,,,,,,,,,,,,,,,,

तूने, ग्वाल*, बाल का, साथ दिया।
तूने, काली*, नाग को, नाथ लिया।
यमुना पे, गऊ, चराई रे,
यह मेरी, समझ, नहीं आई रे।
कान्हा, कैसी, करी है,,,,,,,,,,,,,,,,

तूने, राधा*, का मन, मोह लिया।
तूँ तो, घट घट* में भी, समा ही गया ॥
तूने, कैसी, प्रीत निभाई रे,
यह मेरी, समझ नहीं आई रे।
कान्हा, कैसी, करी है,,,,,,,,,,,,,,,,

तूँ, मथुरा*, नगरी, जब चल पड़ा।
मामा का*, वैरी, बनने गया ॥
मां, बाप की, जेल छुड़ाई रे,
यह मेरी, समझ, नहीं आई रे।
कान्हा, कैसी, करी है,,,,,,,,,,,,,,,,

तूने, यार*, सुदामा, बना लिया।
तूने, नगरी*, अपनी, बुला लिया ॥
मल, मल के, पैर धुलाई रे,
यह मेरी, समझ, नहीं आई रे।
कान्हा, कैसी, करी है,,,,,,,,,,,,,,,,

तुम, नर* सिंह के, संग जब चल पड़े।
तूने, दुखियों* के, दुःख दूर किए ॥
बने, हर, नंदी के, भाई रे,
यह, मेरी, समझ, नहीं आई रे।
कान्हा, कैसी, करी है,,,,,,,,,,,,,,,,

राणा ने*, प्याला, भेज दिया।

तुम तो, प्याले* के, अंदर, समा ही गए ॥
मीरा को, दिए, दिखाई रे,
यह मेरी, समझ, नहीं आई रे ।
कान्हा, कैसी, करी है,,,,,,,,,,,,,,,,,

तुम तो, महाँ*, भारत में, पहुँच गए ।
अर्जुन के*, रथ को, हाँक रहे ॥
तूने, धर्म की, लाज़ बचाई रे,
यह मेरी, समझ नहीं आई रे ।
कान्हा, कैसी, करी है,,,,,,,,,,,,,,,,,
अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33735/title/KANHA-KAISI-KARI-HAI-CHATURAYI-RE

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |